Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2 | अंक 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

2 फरवरी 2016 ई | 4 जमादिल अव्वल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

याद रहे कि जो व्यक्ति उतरने वाला था वह सही समय पर उतर आया और आज सभी भविष्यवाणियां पूरी हुई सभी नबियों की किताबें इसी ज़माने का हवाला देती हैं।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

"याद रहे कि जो व्यक्ति उतरने वाला था वह सही समय पर उतर आया और आज सभी भविष्यवाणियां पूरी हुई सभी नबियों की किताबें इसी ज़माने का हवाला देती हैं। ईसाइयों का भी यही मानना है कि इसी समय में मसीह मौऊद का आना ज़रूरी था उन पुस्तकों में साफ तौर पर लिखा था कि आदम से छठे हज़ार के अंत में मसीह मौऊद आएगा। अत: छठे हज़ार का अंत हो गया और लिखा था कि इससे पहले ज़ुस्सनीन (पुच्छल) सितारा निकलेगा। अत: समय हुआ कि निकल चुका और लिखा था कि उसके दिनों में सूर्य और चंद्रमा एक ही महीने में जो रमज़ान का महीना होगा ग्रहण लगेगा। अत: ज़माना हुआ कि यह भविष्यवाणी भी पूरी हो चुकी और लिखा था कि उसके ज़माने में एक बड़े जोश से प्लेग पैदा होगी इसकी खबर इंजील में भी मौजूद है अत: देखता हूँ कि प्लेग ने अब तक पीछा नहीं छोड़ा। "

(तज़करतुश्शहादतीन, पृष्ठ 24)

122 वां जलसा सालाना कादियान 2016 ई की संक्षिप्त रिपोर्ट (शुरू जलसा से 125 वां साल)

अहमदियत के केंद्र कादियान दारुल अमान में 122 वें जलसा सालाना का सफल और मुबारक आयोजन

मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया द्वारा सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना में सम्मिलित लोगों से अन्तिम सत्र में ईमान वर्धक संबोधन

*** 42 देशों से मेहमानों की भागीदारी, 14,242 अहमदियत के परवानो का जलसा में शामिल होना**

*** हुज़ूर अनवर के समापन भाषण के अवसर पर लंदन में 5,230 अहमदियत के परवानों का शामिल होना**

***नमाज़ तहज्जुद* दर्स क़ुरआन और ज़िक्रे इलाही से परिपूर्ण माहौल * उलमाए कराम की ज्ञान वर्धक तकारीरें *जलसा सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन *महमानों की परिचयात्मक तकारीरें * देशी तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद *अहबाब जमाअत की जानकारी बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण मामलों में वृद्धि के लिए वृत्तचित्र और विभिन्न सूचना सम्बन्धी प्रदर्शनी का आयोजन *नए अहमदियों और मित्रों के लिए तब्लीग़ी जलसा * 26 निकाहों के एलान *प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसा की व्यापक कवरेज *शान्तिमय और सुखद मौसम में जलसा की सारी कार्रवाई का पूरा होना* अलकलम परियोजना का आयोजन *जमाअत अहमदिया इंडोनेशिया से 183 व्यक्ति चार्टर्ड जहाज़ द्वारा जलसा में शामिल हुए। (भाग-2)**

दिनांक 27 दिसंबर 2016 (मंगलवार)

दूसरा दिन- पहला सत्र

इस बैठक की अध्यक्षता आदरणीय सय्यद तनवीर अहमद साहिब सदर अंजुमन अहमदिया वक्फ जदीद कादियान ने की। तिलावत कुरआन से इज्लास शुरू हुआ। आदरणीय मुहम्मद नूरुद्दीन साहिब शिक्षक जामिया अहमदिया कादियान ने सूर: नूर की आयत 52 से 56 तक की तिलावत और अनुवाद सुनाया। बाद में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

हर तरफ फिक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीं, दीने मुहम्मद सा न पाया हम ने

आदरणीय शेख फातेहुद्दीन साहिब मुरब्बी सिलसिला दिल्ली ने पढ़कर सुनाई।

इज्लास की पहली तकरीर आदरणीय मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहिब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया कादियान ने "मुसलमानों की एकता और विश्व शांति की स्थापना नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत से प्रतिबद्ध है " शीर्षक पर की। आप ने अपने भाषण में आयत وَاعۡتَصِمُوۡا بِحَبۡلِ اللّٰہِ جَمِیۡعًا وَّلَا تَفَرَّقُوۡا के प्रकाश में कहा कि मुसलमानों में एकता तथा सहमति का एकमात्र माध्यम ख़िलाफत अहमदिया है। प्रथम ज़माना में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफात के बाद ख़िलाफत द्वारा मुसलमानों में एकता बनी रही। 30 साल बाद ख़िलाफत के त्याग की वजह से मुसलमानों में विखंडन तथा मतभेदों ने घर कर लिया। फिर अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत की स्थापना की। आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब "अलवसिय्यत " से आपके उद्धरण प्रस्तुत करे जिस में आप ने ख़िलाफत अहमदिया सदैव होने की भविष्यवाणी फरमाई है। आपने मुसलमानों की बदहाली का ज़िक्र करते हुए कहा कि एकमात्र कारण अल्लाह

शेष पृष्ठ 2 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पृष्ठ 1 का शेष

तआला द्वारा स्थापित ख़िलाफत से दूरी है।

इज्लास का दूसरा भाषण आदरणीय मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर साहिब नाज़िर दावत इल्लाह मरकज़िया ने “दावत इलल्लाह और जमाअत अहमदिया की ज़िम्मेदारियों” के शीर्षक पर किया।

आप ने अपने भाषण में आयत يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ और اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ के प्रकाश में कहा कि अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो आदेश बल्लग़ का दिया था, उसे आप और आपके सहाबा ने यथा शक्ति किया और सारे अरब में इस्लाम को फैला दिया। हज्जतुल विदा के अवसर पर आप ने सहाबा से पूछा कि क्या मैंने तब्लीग़ का हक अदा कर दिया है? सभी सहाबा ने एक साथ कहा हाँ या रसूलल्लाह अपने तब्लीग़ का हक अदा कर दिया है। आपके बाद आपके ख़लीफ़ा और जाँ कुरबान करने वाले सहाबा ने इस कर्तव्य को पूरा किया और पूरी दुनिया में इस्लाम को फैला दिया। अन्धकार युग के दौर में मुसलमानों ने दावत इलल्लाह की ओर ध्यान न दिया और इस्लाम ग़ैर मुस्लिमों की आपत्तियों का निशाना बन गए और लाखों मुसलमान ईसाई धर्म में प्रवेश हो गए। अल्लाह तआला की रहमत ने सहायता की और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा। आपने 23 मार्च 1889 ई को जमाअत अहमदिया की बुनियाद के साथ दावत इलल्लाह की भी नींव डाली। आज आपकी जमाअत यानी जमाअत अहमदिया सार्वभौमिक और आध्यात्मिक इमाम हजरत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला द्वारा सारी दुनिया में, शानदार रंग में प्रचार-प्रसार का काम चल रहा है। दुनिया के हर देश और देश के लोग इस चश्मे से सिंचित होकर अपने आध्यात्मिक अस्तित्व का सामान कर रहे हैं। अल्हम्दो लिल्लाह।

इजलास की तीसरी और अंतिम तकरीर “ ख़िलाफत प्रणाली का पालन करना और उसकी बरकतें ” के शीर्षक से आदरणीय शिराज़ अहमद साहिब एडीशनल नाज़िर आला दक्षिण भारत कादियान ने की। आप ने अपने भाषण में हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के उपदेशों के आलोक में ख़िलाफत की आज्ञाकारिता के महत्त्व को स्पष्ट किया और कहा कि हमारा काम है सुनो और मानो। अल्लाह तआला और उसके रसूल और अधिकारियों की आज्ञाकारिता हमारा सिद्धांत होना चाहिए। आप ने कहा कि वह क़ौम तरक्की नहीं कर सकती जिस में आज्ञाकारिता की भावना नहीं है। आज्ञाकारिता का अर्थ है जब समय के ख़लीफा के मुंह से कोई आदेश जारी हो तो हमारी सभी योजनाओं, इच्छाओं और परियोजनाओं को पीछे रखकर समय के ख़लीफा के आदेश को कायम रखना होगा। अपने तरीके फेंक कर इस तरीका को अपनाया जाए। समय के ख़लीफा के उपदेश और आदेश का पालन करने से आध्यात्मिकता में तरक्की होती है। इबादत का जोश बनाई गई है। मानव सेवा की भावना को बढ़ावा मिलता है। भव्य तरक्की प्राप्त होती हैं। ख़ुदा तआला की प्रसन्नता और ख़ुशी हासिल होती है। आप की तकरीर के बाद सदर इजलास की अनुमति से यह जलसा समाप्त हुआ।

दूसरा दिन-दूसरा सत्र

दूसरे दिन का दूसरा इजलास नमाज़े ज़ोहर व असर के बाद अध्यक्षता आदरणीय मुनीर अहमद हाफिज़ आबादी वकील आला तहरीक जदीद कादियान आयोजित हुआ। तिलावत कुरआन के बाद आदरणीय फज़ल उमर फ़ारूक़ साहिब छात्र जामिया अहमदिया कादियान ने की। आप ने सूर अलहुजरात की आयत 12 से 18 तक की तिलावत की। इन आयतों का उर्दू अनुवाद आदरणीय मौलाना इनायतुल्लाह साहिब एडीशनल नाज़िर तालीमुल कुरआन व वक्फ आरजीं ने ने पेश किया। आदरणीय मुरशिद अहमद डार साहिब और उनके साथियों ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह का कलाम “बताऊं तुम्हें क्या कि क्या चाहता हूं” पढ़ा।

बाद में आदरणीय ज्ञानी तनवीर अहमद साहिब नायब नाज़िर दावत इलल्लाह मरकज़िया ने “सर्व धर्मों के संस्थापक के सम्मान ही विश्व शांति की गारंटी है, के विषय पर ” पंजाबी भाषा में तकरीर की।

आपने कहा कि आज दुनिया में मनुष्य, जिसे ख़ुदा ने एक बड़े उद्देश्य के लिए बनाया था वह विनाश के गड्ढे में गिरने को तैयार है। हर तरफ अशांति और डर का माहौल है और दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर बढ़ रही है। अगर यह युद्ध हुआ तो इसकी ख़तरनाक छाया सदियों तक मनुष्य का पीछा करती रहेगी। इस अशांति और युद्ध की वजह क्या है और वह क्या कारण हैं जिनके द्वारा इस आपदा से बचा जा सकता है। एक कारण तो इस अशांति का यह है कि धार्मिक नेताओं ने धर्म को राजनीतिक लाभ का माध्यम बना लिया है। माननीय धर्मगुरुओं और पवित्र पुस्तकों पर गंदे आरोप हो रहे हैं जिनके कारण विभिन्न धर्मों के अनुयायियों में चिंता है। अल्लाह तआला कुरआन में कहता है कि हर देश में ख़ुदा के रसूल आते रहे हैं। कोई धर्म अन्याय पूर्वक किसी पर ज़ुल्म की शिक्षा नहीं देता। प्रत्येक धर्म ने शांति प्यार भाईचारा और आपसी प्रेम तथा मुहब्बत की बात की है। आपने कहा कि जमाअत अहमदिया हर धर्म के संस्थापक का सम्मान करती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर धर्म के नेता और पवित्र किताबों का वास्तविक सम्मान किया है और अपनी जमाअत को भी हिदायत की है। आज शांति की स्थापना के लिए एक ही माध्यम है और वह यह कि इस्लाम शांति देने वाली शिक्षाओं पर अनुकरण किया जाए।

हज़रत मसीह मौऊद के बाद आपके ख़लीफाओं ने शांति की स्थापना के प्रयासों को जारी रखा। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने 1928 ई को इरशाद फरमाया कि सर्व धर्म सम्मेलनों के जलसाओं का आयोजन किया जाए। जमाअत अहमदिया इन जलसों द्वारा इस्लाम के बारे में सभी संदेहों को दूर करके इस्लाम के वास्तविक चेहरे को पेश कर रही है। आज जबकि पूरी दुनिया अराजकता का शिकार है और यह सब धर्म के नाम पर हो रहा है, सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ सारी दुनिया में शांति के लिए प्रयास कर रहे हैं। दुनिया के बड़े देशों की पार्लिमेन्टों में जा जाकर आने वाले भयानक खतरों से आगाह कर रहे हैं।

सर्व धर्म सम्मेलन

हर साल जलसा सालाना के अवसर पर दूसरे दिन के दूसरे सत्र में विभिन्न धार्मिक और राजनीतिक नेता जलसा सालाना में तशरीफ़ लाकर जमाअत अहमदिया की शांति के बारे प्रयासों और अन्य सेवाओं के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं। आदरणीय मौलाना मुहम्मद नसीम खान, आदरणीय मौलवी तनवीर अहमद ख़ादिम साहिब और आदरणीय मौलवी फजलुर्रहमान भट्टी साहिब ने बारी बारी निम्नलिखित धार्मिक और राजनीतिक नेताओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए स्टेज पर बुलाया।

(1) आदरणीय अनुराग सूद साहिब (संयोजक सद्भावना समिति होशियारपुर) आप ने अपने विचार व्यक्त करते हुए पहले जलसे की मुबारक बाद पेश की और कहा कि हमें हमेशा हुज़ूर अनवर का मार्गदर्शन मिलता रहता है। जमाअत ने होशियारपुर में चैरिटेबल होमियोपैथी डिस्पेंसरी शुरू की है जो मानवता की सेवा में व्यस्त है। आपने कहा कि जब हम शुरू में यहां आते थे तो इतने धर्मों के लोग यहां नहीं आते थे। अब पर्याप्त इस जलसा में विभिन्न धर्मों के लोग आते हैं। हुज़ूर अनवर से भी मेरी मुलाकात लंदन में हुई थी। हुज़ूर अनवर ने फरमाया है कि अगर सारी दुनिया शांति की स्थापना के लिए कोशिश नहीं करेगी तो तीसरा विश्व युद्ध होकर रहेगा। आप के मंच से सभी धर्मों का सम्मान होता है। अगर यह भावना सारी दुनिया में हो जाए तो कोई युद्ध, लड़ाई, झगड़ा नहीं हो सकता।

(2) सरदार जरनैल सिंह माहल साहिब (चेयरमैन नगर समिति कादियान) आपने कहा कि आज इस खुशी के मौके पर 42 देशों से आने वाले सभी भाइयों को इस जलसा की बधाई। दुआ करता हूँ कि यह जलसा हर साल बढ़ चढ़कर प्यार और सम्मान से मनाया जाए। हमारा जमाअत से बहुत गहरा संबंध है। जमाअत ने जितना प्यार हमें दिया है वह कोई नहीं दे सकता। यह सच्ची जमाअत है।

(3) श्री पी के समंत राय साहिब (बिशप नॉर्थ जोन इंडिया) आप ने अपने सभी सदस्यों और भाई बहनों की ओर से जलसा की बधाई देते हुए कहा कि हमारा कादियान से बहुत गहरा संबंध है। यहां आते-आते बहुत से दोस्त बन गए हैं। हम जहां भी जाते हैं वहां अहमदिया समुदाय से मिलते हैं। कश्मीर में हमारा स्कूल जल गया था, जर्मनी से जमाअत अहमदिया ने उसके बनाने में मदद की। आज सारी दुनिया में मुसलमानों को हर ख़राबी के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। मेरा मानना है कि अपने धर्म के साथ साथ हम दूसरों के धर्म को भी जानें और उस से प्यार करें। हमें नकारात्मक बातों से हटकर सकारात्मक बातों पर अमल करना चाहिए।

(4) डॉ। स्वामी आदेश पूरी साहिब (ऊना, हिमाचल प्रदेश) आप ने कहा यह 122 वां जलसा सालाना है। हम में से यहां कोई 122 साल का नहीं है लेकिन इस जलसा की नींव रखने वाले आज भी जीवित हैं। जो बगीचा उन्होंने 122 साल पहले लगाया था, अहमदिया समाज उसे सींच सींच कर यहां तक लाया है । आप ने कहा कि यह नारा सभी के लिए है कि “ प्यार सबके लिए नफरत किसी से नहीं ।”

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

नए साल की शुरुआत में जो एक जनवरी से शुरू होता है दुनिया वाले क्या कुछ नहीं करते पश्चिमी देशों में या विकसित देशों में विशेष रूप से और बाकी दुनिया में भी 31 दिसंबर और एक जनवरी की रात को क्या कुछ हंगामा नहीं होता। आधी रात तक विशेष रूप से जागा जाता है बल्कि सारी सारी रात जागते हैं केवल शोर शराबे के लिए शराब कबाब के लिए नाच गाने के लिए। मानो पिछले साल का अंत भी लग़्व और बेहोदिगयों के साथ होता है और नए साल की शुरुआत भी लग़्व के साथ होती है। दुनिया की बहुमत की धर्म की आंख तो अंधी हो चुकी है इसलिए उन की तो नज़र वहां तक पहुंच नहीं सकती जहां मोमिन की नज़र पहुंचती है और पहुंचनी चाहिए। एक मोमिन की शान तो यह है कि न केवल इन व्यर्थ से बचे और घृणा व्यक्त करे बल्कि अपनी समीक्षा और विचार करे कि उसके जीवन में एक साल आया और गुज़र गया। इसमें वह हमें क्या दे गया और क्या ले गया। हम ने इस साल में क्या खोया और क्या पाया। क्या एक मोमिन ने सांसारिक लिहाज़ से देखना है कि इस साल में उसने क्या खोया और क्या पाया। उसकी सांसारिक स्थिति में क्या सुधार पैदा हुआ या धार्मिक आधार पर और आध्यात्मिक मामले में देखना है कि क्या खोया और क्या पाया और अगर धार्मिक और आध्यात्मिक मामले को देखना है तो किस गुणवत्ता पर रखकर देखना है। ताकि पता चले कि क्या खोया और क्या पाया।

हम अहमदी भाग्यशाली हैं कि जिन्हें अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद और महदी मअहूद को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई जिन्होंने हमारे सामने अल्लाह तआला और उसके रसूल की शिक्षा का सार या सारांश निकाल कर रख दिया और हमें कहा कि तुम इस गुणवत्ता को सामने रखो तो तुम्हें पता चलेगा कि तुम ने अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा किया है या पूरा करने की कोशिश की है या नहीं? इस मानक को सामने रखोगे तो सही मोमिन बन सकते हो। ये नियम हैं उन पर चलोगे तो सही रूप में अपने ईमान को परख सकते हो।

हम साल की अंतिम रात और नए साल की शुरूआत अगर समीक्षा और दुआ से करेंगे तो अपना परलोक संवारने वाले होंगे और अगर हम भी बाहरी मुबारकबादों और दुनियादारी की बातों से नए साल की शुरुआत करेंगे तो हम ने खोया तो बहुत कुछ पाया कुछ नहीं या बहुत थोड़ा पाया। अगर कमज़ोरियां रह गई हैं और हमारा अवलोकन हमें तसल्ली नहीं दे रहा या तसल्ली नहीं दिला रहा तो यह दुआ हमें करनी चाहिए कि हमारा आने वाला साल पिछले साल की तरह आध्यात्मिक कमज़ोरी दिखाने वाला साल न हो बल्कि हमारा हर कदम अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए उठने वाला कदम हो। हमारा हर दिन रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलने वाला दिन हो। हमारे दिन और रात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बैअत का अहद निभाने की ओर ले जाने वाले हों।

कुरआन मजीद, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के उद्धरण से उन उच्च मापदण्डों का वर्णन जिन पर हमें अपने आप को परखना चाहिए और समीक्षा लेनी चाहिए कि हम उन पर पूरा उतरते हैं या नहीं।?

अल्लाह तआला करे कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस नसीहत और चेतावनी को सामने रखते हुए अपना जीवन बिताने वाले हों। जो बैअत का अहद हमने किया है उसे पूरा करने वाले हों। हमारे जीवन अल्लाह तआला की रजा हासिल करने के लिए गुज़रने वाले हों। हम अपनी जान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ढालते हुए अपने जीवन का अच्छा नमूना लोगों के सामने पेश करने वाले और दिखाने वाले हों। अल्लाह तआला हमारी कमियों को छिपाए और हमें पुरस्कार से सम्मानित करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के लिए जो उपलब्धियां मुक़द्दर हैं वे हमें दिखाए। नया चढ़ने वाला साल बरकतें लाए और दुश्मन की परियोजना असफल और नामुराद हों जिस योजना में यह जमाअत के विरोध में बढ़ते चले जा रहे हैं। पाकिस्तान के अहमदी जो इस साल कादियान के जलसा में नहीं जा सके और इससे बड़ा उन्हें अफसोस भी है अल्लाह तआला उनकी प्यास को समाप्त करने के भी समान पैदा फरमाए। अल्जीरिया के अहमदियों की कठिनाइयों को भी दूर करे।

जब दुश्मन ज्यादतियों और क्रूर हरकतों में बढ़ रहा है तो हमें भी अपनी स्थितियों को अल्लाह तआला की रज़ा के अनुसार ढालते हुए दुआओं पर अधिक ज़ोर देने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान फरमाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 दिसम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ - غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ -

दो दिन बाद इंशा अल्लाह तआला नया साल शुरू हो रहा है। हम मुसलमान तो चांद के साल से साल शुरू करते हैं और यह सौर साल से भी। यह चांद का साल केवल मुसलमानों में नहीं है बल्कि कई देशों में पुराने ज़माने में राष्ट्रों में जारी था। चांद के साल से ही साल शुरू किया गया था। चीनियों में भी है हिंदुओं में भी है अन्य जातियों में भी है। कई धर्मों में पाया जाता है और इस्लाम से पहले अरब में भी दिनों की गणना के लिए चांद का कैलेंडर ही प्रचलित था। बहरहाल दुनिया में आमतौर पर यह गरीगोरईन कैलेंडर प्रचलित है और सब समझते हैं इसलिए हर देश और हर जाति ने इस कैलेंडर को अपने दिन और महीनों की गणना के लिए अपना लिया है तो इसी वजह से दुनिया में हर साल हर जगह के हिसाब से एक जनवरी से साल शुरू होता है और 31 दिसंबर को समाप्त होता है।

बहरहाल साल आते हैं बारह महीने गुज़रते हैं और चले जाते हैं चाहे चांद के महीने के साल हों या जो प्रचलित गरीगोरईन कैलेंडर है इस के साल हों लेकिन दुनिया वाले दिनों और महीनों और सालों को सांसारिक शराबे गपाड़े और हो हा और सांसारिक संतोष के कार्य में गुज़ार कर बैठ जाते हैं चाहे वे मुसलमानों से हैं या ग़ैर मुसलमानों से। नए साल की शुरुआत में जो एक जनवरी से शुरू होता है दुनिया वाले क्या कुछ नहीं करते पश्चिमी देशों में या विकसित देशों में विशेष रूप से और

बाकी दुनिया में भी 31 दिसंबर और एक जनवरी की रात को क्या कुछ हंगामा नहीं होता। आधी रात तक विशेष रूप से जागा जाता है बल्कि सारी सारी रात जागते हैं केवल शोर शराबे के लिए शराब कबाब के लिए नाच गाने के लिए। मानो पिछले साल का अंत भी लग़्व और बेहोदिगयों के साथ होता है और नए साल की शुरुआत भी लग़्व के साथ होती है। दुनिया की बहुमत की धर्म की आंख तो अंधी हो चुकी है इसलिए उन की तो नज़र वहां तक पहुंच नहीं सकती जहां मोमिन की नज़र पहुंचती है और पहुंचनी चाहिए। एक मोमिन की शान तो यह है कि न केवल इन व्यर्थ से बचे और घृणा व्यक्त करे बल्कि अपनी समीक्षा और विचार करे कि उसके जीवन में एक साल आया और गुज़र गया। इसमें वह हमें क्या दे गया और क्या ले गया। हम ने इस साल में क्या खोया और क्या पाया। क्या एक मोमिन ने सांसारिक लिहाज़ से देखना है कि इस साल में उसने क्या खोया और क्या पाया। उसकी सांसारिक स्थिति में क्या सुधार पैदा हुआ या धार्मिक आधार पर और आध्यात्मिक मामले में देखना है कि क्या खोया और क्या पाया और अगर धार्मिक और आध्यात्मिक मामले को देखना है तो किस गुणवत्ता पर रखकर देखना है। ताकि पता चले कि क्या खोया और क्या पाया।

हम अहमदी भाग्यशाली हैं कि जिन्हें अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद और महदी मअहूद को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई जिन्होंने हमारे सामने अल्लाह तआला और उसके रसूल की शिक्षा का सार या सारांश निकाल कर रख दिया और हमें कहा कि तुम इस गुणवत्ता को सामने रखो तो तुम्हें पता चलेगा कि तुम ने अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा किया है या पूरा करने की कोशिश की है या नहीं? इस मानक को सामने रखोगे तो सही मोमिन बन सकते हो। ये नियम हैं उन पर चलोगे तो सही रूप में अपने ईमान को परख सकते हो। प्रत्येक अहमदी से आप ने बैअत की प्रतिज्ञा ली और इस बैअत के वादा में शर्तों में हमारे सामने रखकर रणनीति हमें दे दी जिस पर अनुकरण कर के और उस पर अनुकरण करके हर दिन प्रत्येक सप्ताह हर महीने और हर साल एक समीक्षा हर अहमदी आशा और उम्मीद भी की।

अत: हम साल की अंतिम रात और नए साल की शुरूआत अगर समीक्षा और दुआ से करेंगे तो अपना परलोक संवारने वाले होंगे और अगर हम भी बाहरी मुबारकबादों और दुनियादारी की बातों से नए साल की शुरुआत करेंगे तो हम ने खोया तो बहुत कुछ पाया कुछ नहीं या बहुत थोड़ा पाया। अगर कमज़ोरियां रह गई हैं और हमारा अवलोकन हमें तसल्ली नहीं दे रहा या तसल्ली नहीं दिला रहा तो यह दुआ हमें करनी चाहिए कि हमारा आने वाला साल पिछले साल की तरह आध्यात्मिक कमज़ोरी दिखाने वाला साल न हो बल्कि हमारा हर कदम अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए उठने वाला कदम हो। हमारा हर दिन रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलने वाला दिन हो। हमारे दिन और रात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बैअत का अहद निभाने की ओर ले जाने वाले हों। वह वादा जो हमसे यह सवाल करता है कि क्या हम शिर्क न करने की प्रतिज्ञा को पूरा किया। मूर्तियों और सूरज चाँद को पूजने का शिर्क नहीं बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फरमान के अनुसार वह शिर्क जो कर्मों में दिखावा और बनावट का शिर्क है। वह शिर्क जो छिपी हुई इच्छाओं में पीड़ित होने का शिर्क है।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 4 पृष्ठ 800-801 हदीस नम्बर 24036 आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

क्या हमारी नमाज़ें हमारे रोज़े हमारे सदके हमारी वित्तीय कुरबानी हमारे समाज सेवा के काम हमारी जमाअत के कामों के लिए समय देना ख़ुदा तआला की ख़ुशी पाने के स्थान पर अल्लाह तआला के ग़ैर को ख़ुश करने या दुनिया दिखावे के लिए तो नहीं था। हमारे दिल की छिपी इच्छाएं अल्लाह तआला की तुलना में खड़ी तो नहीं हो गई थीं। इस की व्याख्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस तरह फरमाई है। फरमाया कि

"तौहीद केवल इस बात का नाम नहीं कि मुंह से ला इलाहा इल्लल्लाह कहें और दिल में हज़ार बुत इकट्ठा हों बल्कि जो आदमी अपने काम और छल और फरेब और चतुराई को ख़ुदा की सी महानता देता है या किसी व्यक्ति पर भरोसा रखता है, जो ख़ुदा तआला पर रखना चाहिए या अपने नफ्स को वह महिमा देता है जो ख़ुदा तआला को देना चाहिए इन सब मामलों में वह ख़ुदा तआला के निकट बुत परस्त है।"

(सिराजुद्दीन ईसाई के चार सावलों का जवाब रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 349)

इसलिए इस मानक को सामने रखकर समीक्षा की ज़रूरत है।

फिर उसके बाद यह सवाल है कि क्या हमारा साल झूठ से पूरी तरह से आज़ाद हो कर और पूर्ण सत्य पर कायम रहते हुए व्यतीत हुआ है? अर्थात ऐसे अवसर आने पर जब सत्य की अभिव्यक्ति से अपना नुकसान हो रहा हो लेकिन फिर भी सच्चाई को न छोड़ा जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसकी गुणवत्ता इस तरह निर्धारित की है कि "जब तक इंसान स्वाभाविक स्वार्थों से अलग न हो जो सच्चाई कहने से रोक देते हैं तब तक वास्तविक रूप में प्रत्यक्ष सच कहने वाला नहीं ठहर सकता।" फरमाया "सच बोलने का बड़ा भारी स्थान और अवसर वही है जिस में अपनी जान या माल या सम्मान की आशंका हो।"

(इस्लामी उसूल की फलासफी रूहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 360)

फिर यह सवाल है। क्या हम ने अपने आप को ऐसी बातों से दूर रखा है जिन से गंदे विचार मन में पैदा हो सकते हैं अर्थात आजकल इस युग में टीवी है इंटरनेट है ये इस प्रकार की चीज़ें और इन पर ऐसे कार्यक्रम जो विचारों को गंदा होने का माध्यम बनते हैं उनसे हम ने अपने आप को बचाया है।? अगर हम इन माध्यमों से गंदी फिल्मों और कार्यक्रमों को देख रहे हैं हम बैअत की प्रतिज्ञा से दूर हट गए हैं और हमारी स्थिति चिंता योग्य है क्योंकि ये बातें एक किस्म के व्यभिचार की ओर ले जाती हैं।

फिर सवाल यह है कि क्या हम बद नज़री से अपने आप को बचाने की हर संभव कोशिश की है और कर रहे हैं? क्योंकि बद नज़री का जहां तक सवाल है। इस में यह जो आदेश है कि अपनी नज़रें नीची रखें और गज़्ज़ बसर से काम लो, यह महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए है कि क्योंकि नज़र से देखने के(बद नज़री) संभावनाएं पैदा हो सकते हैं।

फिर यह सवाल है कि क्या हम ने फिस्क़ (अनाचार) और फुजूर (दुराचार)की हर बात से इस साल में बचने की कोशिश की है? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मोमिन से गाली गलोच करना फिस्क़ है।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 2 पृष्ठ 153 हदीस नम्बर 24036 आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

कठोरता से, लड़ाई से, जब लड़ाई झगड़ा होता है, तब आदमी कड़े शब्द भी कह देता है और बुरे शब्द भी कह देता है और एक मोमिन दूसरे मोमिन से जब यह कर रहा हो तो यह फिस्क़ है बल्कि किसी से भी जब कह रहा हो यह फस्क़ है।

फिर आप ने फरमाया कि व्यापारी फासिक होते हैं। निवेदन किया गया यह तो हलाल है। व्यापार करना तो हलाल है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मगर जब ये लोग सौदाबाज़ी करते हैं झूठ बोलते हैं और कसम उठा उठाकर दाम बढ़ाते हैं इस तरह इसी तरह आप ने शुकर और धैर्य न करने वालों को भी अनैतिक फरमाया।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 2 पृष्ठ 385-386 हदीस नम्बर 24036 आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

फिर सवाल यह है कि जो हम ने अपने आपसे करना है कि क्या हम ने अपने आप को हर ज़ुल्म से बचा कर रखा है अर्थात अत्याचार करने से बचा रखा है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि किसी की एक हाथ ज़मीन भी दबा लेना। थोड़ी सी ज़मीन भी किसी की दबा लेना या किसी का एक कंकड़ छोटा सा पत्थर जो है कंकड़ मिट्टी का टुकड़ा वह भी ग़लत तरीके से लेना ज़ुल्म है।

(सहीह बुख़ारी किताब फिल मज़ालिम हदीस नम्बर 2452)

तो यह गुणवत्ता है जिस पर हम ने अपने आप को परखना है।

फिर सवाल यह करना है कि क्या हम ने सभी प्रकार के विश्वासघातों से अपने आप को मुक्त रखा है।? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इससे भी विश्वासघात नहीं करना जो तुम से विश्वासघात करता है।

(सुनन अबू दाऊद हदीस नम्बर 3534)

यह है गुणवत्ता।

फिर हमने यह सवाल करना है कि क्या हम ने हर प्रकार के दंगे से बचने की कोशिश की है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अत्यधिक उपद्रवी लोग दंगाई हैं और यह फसादी हैं जो चुग़ली करने से फसाद पैदा करते हैं यहाँ की बात वहां लगाई इधर से उधर बात फैलाई वे फसाद करने वाले हैं। जो लोग मुहब्बत करने वालो के बीच बिगाड़ पैदा करते हैं वे दंगाई हैं। जो आज्ञाकारी हैं, पालन करने वाले हैं, निज़ाम की हर बात को मानने वाले हैं उन्हें किसी ग़लत काम में पीड़ित करने की कोशिश करते हैं या गुनाह में पीड़ित करने की कोशिश करते हैं

वे फसादी हैं।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 8 पृष्ठ 914 हदीस नम्बर 18153 आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

अत: फसाद के होने के और बचने की यह गुणवत्ता है।

फिर सवाल यह है कि क्या हम प्रत्येक प्रकार के बग़ावती रवैये से परहेज़ करने वाले हैं?

फिर यह सवाल है कि क्या हम नफ्सानी जोशों से पराजित तो नहीं हो जाते? आजकल के ज़माने में जबकि हर तरफ निर्लज्जता फैली हुई है इन नफसानी जोशों से बचना भी एक जिहाद है।

फिर सवाल यह है कि क्या हम पांच बार नमाज़ का प्रावधान कर रहे हैं। साल में नियमित पढ़ते रहे हैं कि कई जगह अल्लाह तआला ने कुरआन में कई स्थानों पर हिदायत फ़रमाई है बल्कि आदेश दिया है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि नमाज़ को छोड़ना आदमी को शिर्क और कुफ्र के निकट कर देता है।

(सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस 82)

फिर हमने यह सवाल करना है कि क्या नमाज़ तहज्जुद पढ़ने की ओर हमारा ध्यान रहा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस बारे में वर्णन है कि नमाज़ तहज्जुद का प्रावधान करो। इसमें नियमित बनने की कोशिश करो। यह सालेहीन का तरीके है फरमाया कि यह अल्लाह तआला की निकटता पाने का माध्यम है। फरमाया कि इसकी आदत गुनाहों से रोकती है। फरमाया कि बुराइयों को ख़त्म करती है और शारीरिक बीमारियों से भी बचाता है।

(सुनन अत्तिर्मज़ी हदीस 3549)

फिर हमने यह सवाल करना है कि क्या हम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने की नियमित कोशिश करते रहे हैं या करते हैं कि यह मोमिनों को अल्लाह तआला के विशेष आज्ञाओं में से एक आदेश है और दुआओं की स्वीकृति का माध्यम भी है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर दरूद के बिना दुआएं हैं तो यह ज़मीन और आसमान के बीच ठहर जाती हैं।

(सुनन तिर्मिज़ी हदीस 486)

अगर तुम ने दरूद नहीं पढ़ा और तुम दुआएं कर रहे हो तो ज़मीन से दुआएं उठेंगी आसमान तक नहीं पहुंचेंगी बीच में ठहर जाएंगी क्योंकि उनमें वह तरीका शामिल नहीं जो अल्लाह तआला ने बताया है। आसमान तक पहुंचाने के लिए आवश्यक है कि दुआ के साथ दरूद भी हो।

फिर सवाल हम ने यह करना है कि क्या हम नियमित इस्तिग़फार करते रहे हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जो व्यक्ति इस्तिग़फार को चिमटा रहता है अर्थात नियमित करता रहता है अल्लाह तआला इसके लिए हर तंगी से निकलने की राह बनाता है और हर मुश्किल से आसानी का रास्ता बना देता है और उसे उन राहों से जीविका प्रदान करता है जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकते।

(सुनन अबी दाऊद हदीस1518)

फिर सवाल यह है कि क्या अल्लाह तआला की प्रशंसा करने की तरफ हमारा ध्यान है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की प्रशंसा के बिना शुरू किया जाने वाला काम ख़राब रहता है बे बरकत होता है बेअसर होता है।

(सुनन इबने माजा हदीस 1894)

फिर सवाल यह है कि क्या हम अपनों और ग़ैरों सब को किसी भी प्रकार का कष्ट पहुँचाने से बचते रहे हैं? क्या हमारे हाथ और हमारी ज़बानें दूसरों को चोट पहुँचाने से बची रही हैं।? क्या हम क्षमा और माफी से काम लेते रहे हैं।? क्या विनम्रता और विनय हमारा गौरव है।? क्या ख़ुशी ग़मी, तंगी और ख़ुशहाली हर हालत में हम ख़ुदा तआला के साथ वफ़ा का संबंध रखते रहे हैं कभी कोई शिकवा तो नहीं पैदा हुआ अल्लाह तआला कि मेरी दुआएं क्यों स्वीकार नहीं की गईं या मुझे इस संकट में क्यों पीड़ित किया गया। अगर यह शिकायत है तो कोई मनुष्य मोमिन नहीं रह सकता।

फिर सवाल यह है कि क्या हर प्रकार की रस्म और लोभ लालसा की बातों से हम ने पूरी तरह बचने की कोशिश की है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह रस्में और बिदअतें तुम्हें गुमराही की ओर ले जाती हैं इन से सावधान बचो।

(सुनन अत्तिर्मज़ी हदीस 2676)

फिर सवाल यह है कि क्या क़ुरआन और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश और उपदेश हम पूरी तरह से अपनाने की कोशिश करते रहे हैं।?

फिर यह सवाल है कि क्या अहंकार और अभिमान को हम ने पूरी तरह से छोड़ दिया है या उसे छोड़ने की कोशिश की है कि शिर्क के बाद सबसे बड़ी बला अहंकार और अभिमान है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अहंकारी जन्नत में प्रवेश नहीं करेगा और अहंकार यह है कि इंसान सच्चाई का इन्कार करे। लोगों को अपमानित समझे। उन्हें हीनता की नज़र से देखे और उनसे बुरी तरह पेश आए।

(सहीह मुस्लिम हदीस 91)

फिर सवाल यह है कि क्या हम ने ख़ुश स्वभाव, उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने की कोशिश की है? क्या हम नम्रता और दरिद्रता को अपनाने की कोशिश की है? दरिद्र का स्थान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र में कितना है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह दुआ फरमाते थे कि हे अल्लाह मुझे दरिद्र की स्थिति में जीवित रख मुझे दरिद्र की हालत में मौत दे और मुझे दरिद्रों के समूह में ही उठाना।

(सुनन इबने माजा हदीस 4126)

फिर सवाल यह है कि क्या हर दिन हमारे अंदर धर्म में बढ़ने और उसकी इज़्ज़त व महानता स्थापित करने वाला बनता है? धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने के लिए का वादा जो हम अक्सर दोहराते हैं सिर्फ खोखला वादा तो नहीं रहा।

फिर सवाल यह है कि क्या इस्लाम की मुहब्बत में हम ने इस हद तक बढ़ने की कोशिश की है कि अपने धन पर इसे प्राथमिकता दी। अपनी इज़्ज़त पर इसे प्राथमिकता दी और अपनी औलाद से अधिक उसे प्रिय और प्यारा समझा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ख़ुदा तआला ने मुझे इस्लाम देकर भेजा है और इस्लाम यह है कि तुम अपनी पूरी हस्ती को अल्लाह तआला के हवाले कर दो। दूसरे उपास्यों को छोड़ दो। नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।

(कन्ज़ुल उम्माल भाग 1 पृष्ठ 152 दारुल कुतुब अल्इमतु बैरूत हदीस 1378)

फिर हमने यह सवाल करना है कि क्या हम अल्लाह तआला की प्रजा से सहानुभूति में आगे बढ़ने की कोशिश करने वाले हैं या कर रहे हैं।?

फिर यह सवाल है कि अपनी सारी शक्तियों के साथ ख़ुदा तआला की प्रजा को लाभ पहुंचाने की कोशिश करते रहे हैं।? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि सारी प्रजा अल्लाह तआला का खानदान है(अल्मुअजमुल औसत भाग 4 पृष्ठ 153 दारुल फिक्र उम्मान 1999 ई) अत: अल्लाह तआला को अपनी सृष्टि से वह व्यक्ति बहुत पसंद है जो उसकी खानदान के साथ अच्छा व्यवहार करता है और उनकी जरूरतों का ख्याल रखता है।

फिर यह सवाल है कि क्या यह दुआ करते रहे और अपने बच्चों को भी समझाते रहे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आज्ञाकारिता की गुणवत्ता हमेशा हम में स्थिर रहें। हम हमेशा आप का पालन करते रहें। उच्च मानकों के साथ और इसमें बढ़ते भी रहें।

फिर यह सवाल है क्या हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भाईचारा का संबंध आज्ञाकारिता की हद तक बढ़ाया है कि बाकी सभी सांसारिक रिश्ते उसके सामने तुच्छ हो जाएं, मामूली समझने लग जाएं।

फिर यह सवाल है कि क्या साल के दौरान ख़िलाफत अहमदिया से वफ़ा और आज्ञाकारिता के संबंध में बने रहने और बढ़ने की हम दुआ करते रहे अपने बच्चों को ख़िलाफत अहमदिया से जुड़े रहने और वफ़ा का संबंध रखने की ओर ध्यान दिलाते रहे और इसके लिए दुआ करते रहे कि उन में यह ध्यान पैदा हो।?

फिर सवाल यह है कि क्या समय के ख़लीफा और जमाअत के लिए नियमित रूप से दुआ करते रहे।?

यदि अक्सर सवालों के सकारात्मक उत्तर के साथ यह साल गुज़रा है तो कुछ कमज़ोरियां रहने के बावजूद हम ने बहुत कुछ पाया। अगर अधिक जवाब नहीं हैं जितने सवाल मैंने उठाए हैं तो चिंता योग्य हालत है हमें अपनी स्थितियों पर विचार करना चाहिए और इसका उपाय इसी तरह हो सकता है कि इन रातों में यह दुआ करें। आज की रात भी है और कल आख़री रात है और दृढ़ इरादा और एक प्रतिबद्धता करें और विशेष रूप से नए साल की शुरुआत में यह दुआ करें कि अल्लाह तआला हमारी पिछली कमियों और त्रुटियों को माफ करे और नए साल में हमें अधिक से अधिक पाने की तौफीक़ दे। हम खोने वाले न हों और हम उन मोमिनों

में शामिल हों जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार रहते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ जिस में आपने अपनी जमाअत को नसीहतें फरमाईं और एक विज्ञापन के रूप में इसे प्रकाशित फरमाया था। आपने फरमाया कि

"मेरी सारी जमाअत जो इस जगह उपस्थित है या अपने स्थान में निवास करती रखते हैं। इस वसीयत को ध्यान से सुनें कि वे जो इस सिलसिले में प्रवेश कर मेरे साथ इरादत और मुरीदी का संबंध रखते हैं। इससे उद्देश्य यह है कि ताकि वे नेक चलनी और नेक किस्मत और तक्वा के उच्च स्तर तक पहुंच जाएँ और कोई दंगा और दुष्टता और बुरे चरित्र उनके निकट न आ सके। वह पांचों समय बाजमाअत नमाज़ के पाबन्द हों। वे झूठ न बोलें वह किसी को ज़बान से कष्ट न दें। वे किसी प्रकार के अधर्म के दोषी न हों और एक शरारत और अत्याचार और हिंसा और फ़ित्ने का विचार भी मन में न लावें। अत: प्रत्येक प्रकार के गुनाहों और अपराधों और न करने योग्य और न कहने योग्य और सभी नफसानी भावनाओं और व्यर्थ हरकतों से बचते रहें।" (सभी प्रकार के गुनाहों से अपने आप को बचा रखें।) और फरमाया कि "और व्यर्थ हरकतों से बचते रहें और ख़ुदा तआला के पवित्र दिल और बुराई रहित और ग़रीब स्वभाव वाले बन्दे हो जाएं और कोई विषाक्त खमीर अपने अस्तित्व में न रहे।"

फरमाते हैं "सभी मनुष्यों की सहानुभूति उनका सिद्धांत हो।" (केवल मोमिन मोमिन की सहानुभूति न करे बल्कि सभी इंसानों की सहानुभूति उनका सिद्धांत हो) "और ख़ुदा तआला से डरें और अपनी ज़बानों और अपने हाथों और अपने मन के विचारों को प्रत्येक अशुद्ध और शरारत के तरीकों और विश्वासघात से बचाऐं और पांचों समय नमाज़ को नियमित स्थापित रखें और ज़ुल्म और अत्याचार और ग़बन और रिश्वत और अधिकारों का मार लेना और व्यर्थ तरफदारी से बचें और किसी बुरी सुहबत में न बैठें और अगर बाद में प्रमाणित हो कि एक व्यक्ति जो उनके साथ आना जाना रखता है वह ख़ुदा तआला के आदेशों का पाबंद नहीं है या बन्दों के अधिकार की कुछ परवाह नहीं रखता और या अन्यायपूर्ण तबीयत और दुष्ट स्वभाव और बद चलन आदमी है और या यह कि जिस व्यक्ति से तुम्हें बैअत का संबंध और इरादत है उसके बारे में ग़लत और अकारण निन्दा और बुरी भाषा और अपमानजनक और बदनामी और झूठ की आदत जारी रखकर ख़ुदा तआला के बन्दों को धोखा देना चाहता है तो तुम पर अनिवार्य होगा कि इस बुराई को अपने बीच से दूर करो और ऐसे इंसान से परहेज़ करो जो ख़तरनाक है" (अर्थात हर वह व्यक्ति जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ बोलता है उसकी सोहबत में बैठने से दोस्ती रखने से उससे संबंध रखने से बचो क्योंकि यह बहुत ख़तरनाक बात है इसका यह मतलब नहीं है कि तब्लीग़ नहीं करनी। मतलब यह है दूसरों को तो करनी है लेकिन जो कपटी तबीयत होते हैं या ग़लत प्रकार की बातें कर रहे हैं और इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सिवाय गालियों के अलावा और बात ही नहीं करनी या जमाअत के ख़िलाफ बोलना है उन से बचो। जो नेक प्रकृति हैं वे बात सुनते भी हैं।)

फिर आप फरमाते हैं कि "और चाहिए कि किसी धर्म और किसी राष्ट्र और किसी गिरोह के आदमी को नुकसान पहुचाने का इरादा मत करो और प्रत्येक के लिए सच्चे नसीहत करने वाले बनो और चाहिए कि दुष्टों और बदमाशों और बुरे लोगों और बदचलनों का कभी तुम्हारी मज्लिस में गुज़र न हो और न तुम्हारे मकानों में रह सकें कि वे एक समय तुम्हारी ठोकर का कारण होंगे।" (अगर अधिक पास रहेंगे और फिर तुम्हें भी ठोकर लगेगी।) फरमाया "ये वे मामले और वे शर्तें हैं जो मैं आरम्भ से कहता चला आया हूँ। मेरी जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति पर अनिवार्य होगा कि इन सभी वसीयतों के लिए प्रतिबद्ध हों और चाहिए कि तुम्हारी मज्लिसों में कोई नापाकी और ठट्ठे और हँसी का काम न हो और नेक दिल और पवित्र तबीयत और शुद्ध विचार होकर ज़मीन पर चलो। याद रखो प्रत्येक बुराई मुकाबला के योग्य नहीं है इसलिए आवश्यक है कि अक्सर क्षमा और माफी की आदत डालो हर जगह मुकाबला करने की ज़रूरत नहीं है। माफ करने की आदत डालो और धैर्य और नम्रता से काम लो और किसी पर अवैध तरीके से हमला न करो और नफसानी भावनाओं को दबाए रखो और अगर कोई बहस करे या कोई धार्मिक बातचीत हो तो नरम शब्दों और सभ्य तरीके से करो। (बहस करनी है धार्मिक बहस करनी है करो लेकिन सभ्य तरीके पर) "और अगर कोई अज्ञानता से व्यवहार करे तो सलाम कहकर ऐसी मज्लिस से जल्दी उठ जाओ अगर तुम सताए जाओ और गालियां दिए जाओ और तुम्हारे बारे में बुरे बुरे शब्द कहे जाएं तो सावधान रहो कि सफाहत का सफाहत के साथ तुम्हारा मुकाबला न हो अन्यथा तुम भी वैसे ही ठहरोगे जैसा कि वे हैं। ख़ुदा तआला चाहता है कि तुम को एक ऐसी जमाअत बना दे कि तुम दुनिया के लिए नेकी और धर्म का नमूना ठहरो। अत: अपने बीच से ऐसे व्यक्ति को जल्द निकालो जो बुराई और दुष्टता और प्रलोभन उपद्रव और बुरे नफस का नमूना है। जो आदमी हमारी जमाअत में ग़रीबी और नेकी और संयम, नम्रता और कोमलता और नेक व्यवहार और नेक चलनी के साथ नहीं रह सकता वह जल्द से अलग हो जाएगा क्योंकि हमारा ख़ुदा नहीं चाहता कि ऐसा व्यक्ति हम में रहे और वास्तव में वे बदबख़्ती में मरेगा क्योंकि उसने नेक राह को धारण न किया तुम होशियार हो जाओ और वास्तव में नेक दिल और ग़रीब स्वभाव और नेक बन जाओ। तुम पांचों समय की नमाज़ और नैतिक हालत से पहचान किए जाओगे और जिस में बुराई का बीज है वह इस नसीहत पर कायम नहीं रह सकेगा।" फरमाते हैं कि "चाहिए कि तुम्हारे दिल धोखा मुक्त हों और तुम्हारे हाथ अत्याचार से मुक्त और तुम्हारी आँखें अशुद्धता से बची हों और तुम्हारे अंदर सिवाय धर्म और मानव जाति की सहानुभूति के और कुछ न हो। फरमाते हैं "मेरे दोस्त जो मेरे पास कादियान में रहते हैं उम्मीद कर रहा हूँ कि वे अपनी सभी मानव शक्तियों में उच्च नमूना दिखाऐंगे।" फरमाते हैं कि "मैं नहीं चाहता कि इस नेक जमाअत में कभी कोई ऐसा आदमी मिला रहे जिसके हालात संदिग्ध हों या जिस के चाल चलन पर किसी प्रकार की आपत्ति हो सके या उसकी तबीयत में किसी प्रकार का उपद्रव पैदा करना हो या किसी और प्रकार की अशुद्धता उस में पाई जाए। अत: हम पर वाजिब और कर्तव्य होगा कि अगर हम किसी से भी कोई शिकायत सुनेंगे कि वह ख़ुदा तआला के फर्ज़ों को जान बूझ कर नष्ट करता है या किसी ठट्ठे और असभ्यता की मज्लिस में बैठ हुआ है (विरोद्धियों की ऐसी मज्लिसों में बैठता है जहां ठट्ठा और असभ्यता हो रही है या वैसे ऐसी मज्लिसें हैं जो गन्दी मज्लिसें हैं) "या किसी और प्रकार के बुरे व्यवहार इस में पाए जाते हैं तो वह शीघ्र अति शीघ्र अपनी जमाअत से अलग कर दिया जाएगा।"

फिर आप फरमाते हैं। "वास्तविक बात यह है कि एक खेत जो मेहनत से तैयार किया जाता और पकाया जाता है उसके साथ ख़राब बूटियां भी पैदा हो जाती हैं जो काटने और जलाने योग्य होती हैं ऐसा ही प्रकृति का कानून चला आया है जिससे हमारी जमाअत बाहर नहीं हो सकती और मैं जानता हूँ कि जो लोग वास्तव में मेरी जमाअत में दाखिल हैं उनके दिल ख़ुदा तआला ने ऐसे रखे हैं कि वे अपने आप बुराई से घृणा और भलाई से प्यार करते हैं और मैं उम्मीद करता हूं कि वह अपने जीवन का बहुत अच्छा नमूना लोगों के लिए प्रकट करेंगे।"

(मजमूआ इश्तेहार जिल्द 3 पृष्ठ 46-49 इश्तेहार 29 मई 1898 ई अपनी जमाअत को सचेत करने के लिए एक आवश्यक इश्तेहार)

अल्लाह तआला करे कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस नसीहत और चेतावनी को सामने रखते हुए अपना जीवन बिताने वाले हों। जो बैअत का अहद हमने किया है उसे पूरा करने वाले हों। हमारे जीवन अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने के लिए गुज़ारने वाले हों। हम अपनी जिन्दगियां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ढालते हुए अपने जीवन का अच्छा नमूना लोगों के सामने पेश करने वाले और दिखाने वाले हों। अल्लाह तआला हमारी कमियों को छिपाए और हमें इनामों से सम्मानित करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत के लिए जो उपलब्धियां मुक़द्दर हैं वे हमें दिखाए। नया चढ़ने वाला साल बरकतें लाए और दुश्मन की परियोजनाएं असफल और नामुराद हों जिस योजना में यह जमाअत के विरोध में बढ़ते चले जा रहे हैं ।

पाकिस्तान के अहमदी जो इस साल कादियान के जलसा में नहीं जा सके और इससे बड़ा उन्हें अफसोस भी है, अल्लाह तआला उनकी प्यास को समाप्त करने के भी समान पैदा फरमाए।

अल्जीरिया के अहमदियों की कठिनाइयां भी दूर करे उनमें से भी कुछ पर ग़लत मुकदमे हैं और जेलों में इस समय कैदी बने हुए हैं। जेलों में उन्हें रखा है। अल्लाह तआला उनकी भी रिहाई के समान पैदा फरमाए है। जब दुश्मन ज्यादतियों और क्रूर हरकतों में बढ़ रहा है तो हमें भी अपनी स्थितियों को अल्लाह तआला की रज़ा के अनुसार ढालते हुए दुआओं पर अधिक ज़ोर देने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान फरमाए।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

(5) कमल प्रीत जस्सी साहिब (कादियान क्षेत्र से AAP जमाअत के उम्मीदवार) जमाअत को जलसा की बधाई देते हुए आपने कहा कि इस तरह की सभाओं से आपस में प्रेम बढ़ता है।

(6) मास्टर गुरू करमा तापकी साहिब (बुद्धिस्ट समुदाय नेपाल के प्रमुख) आप ने कहा कि हुज़ूर अनवर को दिल से सलाम करता हूं। आप पूरी दुनिया को शांति की शिक्षा दे रहे हैं। आप के मार्गदर्शन से सभी धर्मों के बीच प्यार पैदा हो रहा है। भारत एक ऐसा देश है जहां कई महान हस्तियां पैदा हुई हैं जिनकी वजह से यहाँ अमन स्थापित है। यह दिन बहुत मुबारक और शांति के दिन हैं। आप ने हार्दिक इच्छा जताई कि हुज़ूर अनवर को शांति का नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए।

(7) संत बाबा संतोख सिंह साहिब (हेड कार सेवा संस्था पंजाब) जलसा की बधाई देते हुए आपने कहा कि यह बहुत ख़ुशी का दिन है। यह जलसा सर्व धर्म सम्मेलन से हमारा बहुत पुराना संबंध है। गुरू गोबिन्द सिंह जी की लड़ाई मुसलमानों के ख़िलाफ नहीं बल्कि अत्याचार के खिलाफ थी। कई मुसलमानों ने आपका साथ दिया। हमारा अपने मुसलमान भाइयों से बहुत पुराना रिश्ता है। अल्लाह से दुआ करता हूँ कि यह प्यार इसी तरह बना रहे। हज़रत मिर्जा मसरूर जी अपने उद्देश्य में सफल हों।

(8) मास्टर मोहन लाल साहिब (पूर्व मंत्री सरकार पंजाब) आप ने नए साल की बधाई देते हुए कहा कि मेरी दुआ है कि दुनिया में हर जगह आप ख़ुश रहें। अगर इस दुनिया को नष्ट होने से बचाना है तो प्राकृति को बचाना होगा। हम इस धरती को रहने की जगह बनाने के लिए और अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। अल्लाह की नेमतों का सम्मान करें। हम जानबूझकर इस ज़मीन में जहर घोल रहे हैं। आज हम यहां से यह प्रतिज्ञा करके जाएं कि हम पृथ्वी को बचाने की कोशिश करेंगे। अल्लाह आप पर रहम करे।

(9) श्री यादविनदर सिंह बुट्टर साहिब (नेता अल्पसंख्यक मोर्चा भाजपा) आप ने सभी धार्मिक और राजनीतिक नेताओं को सलाम अर्ज़ करते हुए कहा कि मेरे पिता सरदार सवेला सिंह बुट्टर साहिब का जमाअत से पुराना संबंध रहा है। मैं इस रिश्ते को निभाने के लिए अपनी पूरी फैमिली के साथ यहाँ आया हूँ। मैं अपने बच्चों को यह बताने के लिए यहां लाया कि उनके अब्बा तथा दादा का संबंध किन लोगों के साथ था। मेरी प्रबल इच्छा है कि हुज़ूर अनवर को नोबेल पुरस्कार दिया जाए।

(10) श्री फतह जंग सिंह बाजवा साहिब (महासचिव कांग्रेस जमाअत पंजाब) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब से लंदन में एक सम्मेलन के मौके पर मिला था । जलसा किया था ऐसा लगता था कि जैसे कोई समुद्र हो। अहमदियों का एक शहर बसा हुआ था। हुज़ूर के क़दमों में बैठ कर मैंने वह जलसा देखा हमारा इस जमाअत के साथ बहुत गहरा संबंध है। हमारा जमाअत के साथ राजनीतिक नहीं बल्कि दिल का रिश्ता है। जब मैं नौवीं कक्षा में था तब सर ज़फ़रुल्लाह ख़ान कादियान आए थे। सर ज़फ़रुल्लाह ख़ान ने मुझ से कहा था कि बेटा आप को पता है कि ज़फर और फतह का एक ही मतलब है यानी जीत। उन्होंने मुझे अपना दोस्त बनाया और मेरा उनसे पत्राचार होता रहा। आज इस मुक़ाम पर उनकी दुआ से ही पहुंचा हूं।

(11) सरदार सेवा सिंह सेखवां (अकाली नेता व सदस्य शिरोमणि गुरुद्वारा परबंधक समिति) आप ने ख़ुशी व्यक्त करते हुए कहा कि हर साल जमाअत अहमदिया सम्मेलन आयोजित करती है इस बार भी बड़ी श्रद्धा अच्छी व्यवस्था के साथ यह जलसा मनाया जा रहा है । केवल इसी एक दिन ही जमाअत सर्व धर्म सम्मेलन नहीं मनाती बल्कि सारा साल ही मनाती रहती है। मेरा जमाअत से वैसा ही रिश्ता है जैसा हरमिंदर साहिब से। हरमंदिर साहिब की बनियाद एक मुसलमान फकीर मियां मीर जी ने रखी थी। धर्म सबको जोड़ता है। जमाअत अहमदिया पूरी दुनिया में शांति के लिए प्रयास कर रही है कि कैसे दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध से बचाया जाए। आप ने इंडोनेशिया से एक विशेष विमान के द्वारा अहमदियों के कादियान आने पर ख़ुशी प्रकट की।

(12) श्री हरविनदर सिंह टाहली वाले आपने जलसा की बधाई देते हुए कहा कि आज अगर सारी दुनिया में इस तरह के समारोह होते रहें तो दुनिया में शांति की स्थापना हो सकती है। मैंने सभी धर्मों के ग्रंथों का अध्ययन किया है कोई भी नफरत की बात नहीं करता, सब प्यार की बात करते हैं। मुझे गर्व है कि 122 साल पहले जो जलसा मिर्ज़ा साहिब ने शुरू किया मुझे इसमें शामिल होने का मौका मिला। अगर शांति स्थापित करना है तो हम सब को एक होना होगा।

इस अवसर पर सरदार भूपेंद्र सिंह हॉलैंड और संत बाबा दलेर सिंह साहिब कपूरथला को भी जमाअत द्वारा सम्मान दिया गया। जिसके बाद सदर जलसा की अनुमति से जलसा बर्खास्त हुआ

दिनांक 28 दिसंबर 2016 (बुधवार)

तीसरा दिन- पहला सेशन

जलसा के तीसरे दिन का पहला सत्र आदरणीय शिराज़ अहमद साहिब एडीशनल नाज़िर दक्षिण भारत कादियान की अध्यक्षता आयोजित हुआ। आदरणीय हाफिज़ नकीबुल अमीन साहिब मुअल्लिम इस्लाह व इर्शाद तथा तालीमुल क़ुरआन वक़्फ आरज़ी ने सूर: अन्नहल आयत 90 से 92 की तिलावत की और अनुवाद भी पढ़कर सुनाया। आदरणीय रिज़्वान अहमद नासिर साहिब उस्ताद जामिया आहमदिया कादियानी ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि रहमहुल्लाह का नज़्म

दो घड़ी सबर से काम लो साथियो

पढ़कर सुनाई।

इस सत्र की पहली तकरीर "सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के फिदा होने की भावना) के विषय पर आदरणीय मौलाना सुल्तान अहमद ज़फर साहिब नाज़िम इरशाद वक़्फ जदीद कादियान ने की जिसमें आप ने सय्यदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हज़रत रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बेपनाह प्यार और इश्क वफ़ा से संबंधित ईमान अफ़रोज़ और ईमान वर्धक घटनाएं वर्णन फरमाई। आप ने अपने आप को रसूल पाक स.अ.व. के प्यार में पूर्ण रूप से फना कर दिया था।

इस इज्लास की दूसरी तकरीर "जमाअत अहमदिया और कुरआन की सेवा" के विषय पर आदरणीय मौलाना अताउल मुजीब साहिब लोन नायब नाज़िर नश्रो इशाअत कादियान ने की। आप ने अंतिम समय में मुसलमानों की दुर्दशा, कुरआन की शिक्षा से बेरुखी और परित्यक्त करने का जिक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद द्वारा धर्म को पुनर्जीवित करने का वर्णन किया। जमाअत अहमदिया द्वारा कुरान की उत्कृष्ट सेवाओं का उल्लेख करते हुए आप ने बताया कि आज ख़िलाफत ख़ामसा के मुबारक दौर में भी काम में तेज़ी स्पष्ट है और सारे संसार को शांति तथा हिदायत की शिक्षा से अवगत किया जा रहा है।

इसके बाद सम्मान्नीय अतिथि आदरणीय अविनाश राय खन्ना साहिब ऑफ होशियारपुर उपाध्यक्ष बी.जे.पी, वाइस चेयरमैन इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी ने अपने विचार व्यक्त किए। आप ने जलसा के मेहमानानों का जलसा सालाना में भाग लेने पर धन्यवाद और बधाई दी और बताया कि यह जलसा आपसी भाईचारा, प्रेम और शांति के साथ मिलकर तरक्की करने के लिए एक प्रशिक्षण स्थल है। आप ने कहा कि धर्म मनुष्य को एक सच्चा आदमी बनाने के लिए ही अस्तित्व में आया। अपने भाषण के अंत में उन्होंने ने इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ की सेवा में अगले साल जलसा सालाना कादियानी में कादियान और होशियार पुर पधारने का निवेदन किया।

बाद में सरदार प्रताप सिंह बाजवा साहिब ऑफ कादियान सांसद राज्यसभा ने अपने विचार पेश किए। उन्होंने ने जमाअत अहमदिया की सेवाओं को सराहा और कहा कि मैं विदेशों में कई देशों में गया हूँ जहाँ अहमदी मित्रों ने अपने नेक नमूना से अपनी एक अलग पहचान बनाई है और अपनी ईमानदारी और नेक आदतों के कारण ये हर जगह सराहनीय समाज सेवा के कार्यों में भी आगे आगे हैं।

इस बैठक की तीसरी तकरीर "अहमदियत वास्तविक इस्लाम (जमाअत अहमदिया पर अत्याचार और जमाअत के व्यक्तियों का धैर्य और दृढ़ता) आदरणीय मौलाना मकसूद अहमद साहिब भट्टी मुबल्लिग प्रभारी श्रीनगर जम्मू-कश्मीर ने की। आप ने जमाअत अहमदिया के गठन की पृष्ठ भूमि प्रस्तुत करते हुए इस सिलसिले के दूसरे इलाही सिलसिलों की तरह दुख और कठिनाइयों का सामना होने की फिलासफी वर्णन की। आप ने जमाअत अहमदिया पर अत्याचार का उल्लेख करते हुए अलग अलग समय में जमाअत अहमदिया के लोगों का बलिदान और धैर्य तथा ईमान वर्धक घटनाएं वर्णन कीं बाद में सदर इजलास की अनुमति से जलसा बर्ख़ास्त हुआ।

तीसरा दिन- दूसरा सेशन

जलसा के तीसरे दिन दूसरा सेशन दो इजलासों पर आधारित था। पहला सत्र मुहतरम मौलाना जलालुद्दीन साहिब नय्यर सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। आदरणीय उस्मान पाशा साहिब ने कुरईन की सूर:

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 2 Thursday 2 February 2017 Issue No. 5

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

आले इमरान आयत नंबर 103 से 106 तक तिलावत की। जिस का उर्दू अनुवाद आदरणीय ताहिर अहमद साहिब तारिक नायब नाज़िर इस्लाहो इरशाद मरकज़िया ने पढ़ कर सुनाया। आदरणीय कामरान अहमद साहब ऑफ राजौरी जम्मू ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम "हमें उस यार से तक्वा अता है।" पढ़कर सुनाया।

इस के बाद हिन्दुस्तान के विभिन्न राजनीतिक और समाजी हस्तियों की ओर से जलसा सालाना कादियान की उपयोगिता, महत्त्व और सफल आयोजन से संबंधित संदेश दर्शकों के सामने पेश किए गए। इन संदेश भेजने वाली हस्तियों में राष्ट्रपति भारत माननीय प्रणव मुखर्जी साहिब, प्रधानमंत्री भारत सरकार माननीय नरेंद्र मोदी साहिब प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित हस्तियों ने भी संदेश पहुंचाए और शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

* श्री मनमोहन सिंह साहिब पूर्व प्रधान मंत्री भारत सरकार * श्री सुरेश प्रभू साहिब रेल मंत्री भारत सरकार * श्री मुख़्तार अब्बास नकवी साहिब मंत्री अल्पसंख्यक मामले भारत सरकार * श्री कलराज मिश्र साहिब Indian Union Cabinet Minister of Micro, Small and Medium Enterprises * श्री अनंत कुमार साहिब मंत्री संसदीय कार्य भारत सरकार * श्री राजीव प्रताप रूड़ी साहिब महासचिव भाजपा * श्री किरण रजेजो साहिब केंद्रीय राज्य मंत्री आंतरिक भारत सरकार * श्री सदानंद गौड़ा साहिब केंद्रीय कानून मंत्री व न्याय भारत सरकार *जनाब मनोहर पर्रिकर मंत्री रक्षा भारत सरकार * श्री अभिजीत मुखर्जी पुत्र श्री प्रणब मुखर्जी साहिब राष्ट्रपति भारत, मैम्बर आफ संसद।

आदरणीय शिराज़ अहमद साहिब एडीशनल नाज़िर आला दक्षिण भारत ने मित्रों के संदेश पढ़कर सुनाए।

इसके बाद आदरणीय मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया कादियान ने जलसा के प्रत्येक दृष्टि से सफल आयोजन होने पर अल्लाह तआला के हुज़ूर आभार व्यक्त करते हुए इस जलसा की सफलता के लिए प्यारे इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ का विशेष धन्यवाद अदा किया। तथा प्रशासन सहित जलसा में शामिल होने वाले और जलसा की सफलता के लिए प्रयासरत सभी अहमदियों और सरकारी तथा ग़ैर सरकारी सहयोगियों का भी धन्यवाद अदा किया। आदरणीय सभापति के समापन भाषण और दुआ के साथ यह पहला सत्र अपने अंत को पहुंचा।

इसके बाद मंच और जलसा स्थल पर दर्शक अपनी अपनी जगह पर बैठे रहे ताकि वे एम टी ए द्वारा प्रसारित होने वाले अपने प्यारे इमाम का जलसा सालाना कादियान से लाइव संबोधन सुन सकें। तक़रीर के दौरान पूरा जलसा गाह दर्शकों से भरा था। हुज़ूर अनवर की तक़रीर से पहले मुस्लिम टेलीविजन अहमदिया इंटरनेशनल द्वारा एक विशेष कार्यक्रम प्रसारित हुआ। जिसमें MTA-INDIA की ओर से बनाई गई जलसा की कुल कार्रवाई की थोड़ी झलकियाँ दिखाई गईं और कादियान दारुल अमान में जलसा के दिन रात उत्तम तरीके से प्रस्तुत किए गए।

इसके बाद एम टी ए पर लाइव कार्यक्रम शुरू हुआ। हुज़ूर अनवर बैतुल फ़ुतूह में ताहिर हॉल में मंच पर रौनक अफ़रोज़ हुए। लंदन में भी पांच हज़ार से अधिक दर्शक हुज़ूर अनवर के ख़िताब के इंतज़ार में थे।

तिलावत कुरान आदरणीय हाफिज़ ज़फ़रुल्लाह साहिब ने की। आप ने सूर: अन्नूर आयत 55 से 57 की तिलावत और अनुवाद भी पेश किया। बाद ही आदरणीय सय्यद आशिक हुसैन साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पवित्र फ़ारसी कलाम मीठी आवाज़ के साथ सुनाया और उसका अनुवाद भी पेश किया। सय्यदना मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उर्दू कलाम "है शुक्र रब्बे अज़्ज़ व जल्ल ख़ारिज अज़ बयां" से कुछ शेअर आदरणीय मुर्तज़ा मन्नान साहिब ने मीठी आवाज़ के साथ प्रस्तुत किए।

हुज़ूर अनवर के ख़िताब के लिए जलवा अफ़रोज़ होते ही जलसा गाह कादियान और लंदन प्रत्येक दोनों स्थानों का माहौल नारा तकबीर की गगनचुंबी आवाज़ों से गूंज उठा। (शेष .....)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

हुज़ूर अनवर के साथ वकफ़े नौ किलास

प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ वाकफ़ीन नौ की किलास

तरबियत के लिए ज़रूरी बातें

एक बच्ची ने सवाल किया कि बच्चों के तरबियत के बारे में कोई चीज़ जो बहुत ज़रूरी हो ?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अपना नमूना ऐसा करें कि बच्चे उसे देखकर पालन करें और नमूना पकड़ें। नमाज़ों में पाबन्दी आप में हो। कुरआन की तिलावत आप रोज़ाना करने वाले हों, माँ और पिता दोनों तिलावत करने वाले हों, सिर्फ नेकी करने की हिदायत न हो बल्कि ख़ुद नेकियों की तरफ माँ बाप का भी ध्यान हो। सच बोलने की ओर आदत मां बाप की हो। गलत बात को बरदाशत न करें। बच्चे को यह पता हो कि मेरे मां बाप ख़ुद भी सच बोलते हैं और सच पसंद करते हैं तो आपका अपना काम है जो बच्चों को नेक बनाएगा।

ख़िलाफ़त के सम्मान की एक घटना

एक बच्ची ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर बचपन में किसी बुज़ुर्ग या किसी सहाबी के साथ कोई यादगार घटना हो तो हुज़ूर बताएं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा: हमारे दादा (हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब) जब फौत हुए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे छोटे बेटे थे, उस समय मेरी उम्र ग्यारह साल थी। तो दो साल पहले उन्होंने एक बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि से मिलने जाना था। वह मुझे भी साथ ले गए। तो यह नहीं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के छोटे भाई थे इसलिए घर के अंदर चले गए। आपने ऐसा नहीं किया बल्कि घर के बाहर खड़े रहे और मुझे अंदर भेजा जा कर बताओ कि मैं मिलना चाहता हूँ। तो मैं ऊपर गया और छोटी आपा (हज़रत मरियम सिद्दीक़ा साहिबा मरहूमा) की वहां ड्यूटी थी। मैंने उन्हें बताया कि वह मिलने आ रहे हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि की तबीयत ठीक नहीं थी। वह लेटे हुए थे तो हुज़ूर के Bed एक ओर उन्होंने कुर्सी रख दी। फिर मैं नीचे आया और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब को ऊपर ले गया। आप ने ऊपर जाकर कुर्सी एक तरफ कर दी और नीचे फर्श पर बैठ गए। उस ज़माने में कारपेट तो नहीं होते थे साधारण दरियां होती थीं जो फर्श पर बिछी हुई थी। इसलिए उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि से जो बातें करनी थीं कीं। मैं तो आठ, नौ साल का था मुझे पता नहीं कि क्या बातें हुईं। बहरहाल, इस के बाद बड़े अदब से उठे और पीछे होते हुए चले गए। तो वह एक सबक मेरे मन में अभी भी है। ख़िलाफ़त का सम्मान कैसे करना चाहिए। चाहे भाई हो लेकिन ख़िलाफ़त का अदब और सम्मान प्रथम है। इस तरह कई बड़ों की बातें होती हैं जो हमेशा याद रहती हैं। उस समय से, बचपन से ही मेरे दिमाग़ में यह घटना याद है और यह याद है कि ख़िलाफ़त का सम्मान करना है।

(अल्फज़ल 15-21 नवम्बर 2013)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें
नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad